इबराहीम -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अपने दूध पीते बच्चे इसमाईल –अलैहिस्सलाम- तथा उनकी माता को साथ लेकर आए और काबा के पास, एक बहुत बड़े पेड़ के निकट एक स्थान में छोड़ गए, जो ज़मज़म के ऊपर और मस्जिद के सबसे ऊँचे भाग में था। उस समय मक्का में कोई नहीं रहता था तथा पानी की व्यवस्था भी नहीं थी।

अब्दुल्लाह बिन अब्बास -अल्लाह उनसे प्रसन्न हो- कहते हैं : इबराहीम -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अपने दूध पीते बच्चे इसमाईल –अलैहिस्सलाम- तथा उनकी माता को साथ लेकर आए और काबा के पास, एक बहुत बड़े पेड़ के निकट एक स्थान में छोड़ गए, जो ज़मज़म के ऊपर और मस्जिद के सबसे ऊँचे भाग में था। उस समय मक्का में कोई नहीं रहता था तथा पानी की व्यवस्था भी नहीं थी। उन्हें वहाँ छोड़ते समय चमड़े की थौली में कुछ खजूर और एक मशक पानी दे गए। जब इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- वापस जाने लगे, तो इसमाईल –अलैहिस्सलाम- की माता उनके पीछे-पीछे चलने लगीं और कहने लगीं : ऐ इबराहीम, आप हमें इस घाटी में छोड़कर कहाँ जा रहे हैं, जहाँ न कोई बात करने वाला है औक न कोई ज़रूरत का सामान? उन्होंने यह बात कई बार दोहराई, लेकिन इबराहीम -अलैहिस्सलाम- ने ध्यान नहीं दिया। अंततः, उन्होंने कहा : क्या अल्लाह ने आपको यह आदेश दिया है? फ़रमायाः हाँ। इसमाईल –अलैहिस्सलाम- की माता ने कहा : तब तो फिर अल्लाह हमें व्यर्थ नहीं करेगा। फिर वह वापस हो गईं। उधर इबराहीम -अलैहिस्सलाम- चलते रहे, यहाँ तक कि जब सनिय्या के पास पहुँचे, जहाँ से लोग उन्हें देख नहीं सकते थे, तो काबा की ओर मुँह करके यह दुआ की : “ऐ मेरे रब, मैंने अपनी कुछ संतान को, मरुस्थल की एक वादी में, तेरे सम्मानित घर के पास बसा दिया है, ताकि वह नमाज़ की स्थापना करें। अतः, लोगों के दिलों को उनकी ओर आकर्षित कर दे और उन्हें जीविका प्रदान कर, ताकि वे कृतज्ञ हों। [सूरा इबराहीम : 37] इसमाईलस-अलैहिस्सलाम- की माता उनको दूध पिलाती रहीं और मशक का पानी पीती रहीं, यहाँ तक कि जब मशक का पानी समाप्त हो गया, तो उनको तथा उनके पुत्र को प्यास सताने लगी। उनकी आँखों के सामने उनका बेटा प्यास के मारे धरती में लोटने लगा। जब उनसे देखा न जा सका, तो वहाँ से चल पड़ीं और निकटतम पहाड़ी सफ़ा पर जाकर चढ़ गईं तथा घाटी की ओर देखने लगीं कि कोई नज़र तो नहीं आ रहा? जब कोई नज़र नहीं आया, तो सफ़ा से उतरकर घाटी की ओर बढ़ीं। घाटी में पहुँचकर लबादा के किनारे को उठा लिया और संकटग्रस्त व्यक्ति की तरह चलते हुए घाटी को पार कर गईं। फिर मरवा पहाड़ी पर आईं और उसके ऊपर चढ़कर देखने लगीं कि क्या कोई नज़र आ रहा है? जब कोई नज़र नहीं आया, तो उन्होंने ऐसा सात बार किया। इब्ने अब्बास -अल्लाह उनसे प्रसन्न हो- कहते हैं कि नबी -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया : “यही कारण है कि लोग आज भी इन दोनों पाड़ियों के बीच दौड़ लगाते हैं। वह आगे कहते हैं : जब वह अंतिम बार मरवा पर आईं, तो एक आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने स्वयं को ख़ामोश रहने कहा और ध्यानपूर्वक सुनने लगीं। जब फिर भी आवाज़ सुनाई दी, तो बोलीं : -ऐ वह व्यक्ति, जिसकी आवाज़ मैं सुन रही हूँ!- तुमने अपनी सुना दी है। अब यह बताओ कि क्या तुम मेरी कुछ मदद कर सकते हो? तब उन्होंने देखा कि ज़मज़म के पास एक फ़रिश्ता खड़ा है, जो अपनी एड़ी –या कहा कि अपने पर- से धरती को खोद रहा है, यहाँ तक पानी निकल आया। यह देख वह अपने हाथों

सका। फिर जब घाटी तक पहुँचीं, तो दौड़ने लगीं, यहाँ तक कि मरवा पर चढ़ गईं। इस तरह उन्होंने दोनों के बीच कई चक्कर लगाए। फिर सोचीं कि अब चलकर देखना चाहिए कि बच्चे का क्या हुआ। जाकर देखा, तो पाया कि वह उसी हालत में है। गोया कि वह मौत की सिस्की ले रहा था। बच्चे को देखने के बाद उनके दिल को क़रार न मिल सका। इसलिए सोचा कि फिर जाकर देखना चाहिए, शायद किसी का कुछ पता चल सके। चुनाँचे जाकर सफ़ा पर चढ़ गईं और देर तक इध-उदर देखती रहीं। लेकिन किसी का कुछ पता न चल सका। यहाँ तक कि सफ़ा तथा मरवा के बीच सात चक्कर पूरे हो गए। फिर दिल में आया कि जाकर देखना चाहिए कि बच्चे का क्या हुआ। इतने में, एक आवाज़ सुनाई दी। अतः, उन्होंने कहा : यदि तुम्हारे पास कोई भलाई है, तो हमारी सहायता करो। फिर क्या देखती हैं कि जिबरील खड़े हैं। उन्होंने अपनी एड़ी को धरती को इस तरह मारा। यह कहते हुए अब्दुल्लाह बिन अब्बास –रज़ियल्लाहु अनहु- ने अपनी एड़ी को धरती पर मारकर दिखाया। चुनाँचे जलस्रोत बह निकला, जिससे इसमाईल –अलैहिस्सलाम- की माता घबरा गईं और चुल्लू भर-भरकर पानी लेनी लगीं। ... फिर पूरी हदीस बयान की।
[सह़ीह़] [इसे बुख़ारी ने रिवायत किया है।]

http://www.sunnah.global/hadeeth/hi/show/8346